योजना का सार

भारतीय किलों की विरासत

भूमिका

- हमारे देश में किलों के निर्माण की कला सिंधु घाटी सभ्यता से भी प्राचीन है और उस काल की खुदाई में भी विशाल रक्षा प्राचीरों पर बने निचले किलों और ऊपरी किलों के होने के प्रमाण मिले हैं। हालाँकि महाजनपद काल में नगरों की संख्या अधिक नहीं थी, परंतु उस दौर के साहित्य में पुरों का उल्लेख है (जैसे- उज्जैन, द्वारिका, इंद्रप्रस्थ) जिनके चारों ओर सुरक्षा की दृष्टि से मिट्टी और गारे की विशाल प्राचीरें बनाई गई थीं।

प्राचीन काल में किलों के साक्ष्य

- कौटिल्य ने अपने सप्तांग सिद्धांत में (देश के सात मूल अंगों) में दुर्गों को चौथे स्थान पर रखा है।
- समय के साथ-साथ प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से तीसरी शताब्दी ईस्वी तक बस्तियों, शहरों और नगरों के चारों ओर गहरी खाइयाँ बनाकर मिट्टी की विशाल प्राचीरें निर्मित की जाती थीं।
- किलों और संरक्षित शहरों का सबसे प्राचीन उल्लेख मेगस्थनीज़ ने और फिर प्लिनी ने किया है, जिसमें आंध्र देश (वर्तमान आंध्र प्रदेश और तेलंगाना तथा महाराष्ट्र के कुछ हिस्से) में तीस दीवारों वाले शहर और अनेकानेक गाँवों का वर्णन है।
- मध्ययुगीन काल (11वीं ईस्वी से 17वीं ईस्वी) में शासनों और साम्राज्यों के सशक्त सैन्य गढ़ों, गहरी खाइयों और छतों पर बनी रक्षा दीवारों तथा प्रवेश द्वारों के विस्तार में सैन्य वास्तुकला की प्रमुख भूमिका विकसित हुई।

दिल्ली के किले

- दिल्ली का सबसे पहला किला 11वीं शताब्दी का माना जाता है, जब तोमर शासक अनंतपाल ने लालकोट किला बनवाया। बाद में पृथ्वीराज चौहान ने इसके चारों ओर विशाल प्राचीर बनवाकर किले का विस्तार किया।
- दिल्ली सल्तनत के दौरान कई किले बनाए गए, जिसने भारत में इंडो-इस्लामिक स्थापत्य शैली की भी शुरुआत की।

तुगलकाबाद का किला

- दिल्ली सल्तनत यह किला 14वीं शताब्दी में गयासुद्दीन तुगलक द्वारा बनवाया गया था।
- यह किला दिल्ली में तुगलकों द्वारा बनाए गए एक नए शहर का हिस्सा था जिसे तुगलकाबाद कहा जाता था।

आदिलाबाद किला

- इसका निर्माण मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा 1327-28 ई. में करवाया गया जो संभवत: तुगलकाबाद किले का विस्तार प्रतीत होता है।

किला-ए-कुहना (पुराना किला)

- इसका निर्माण कार्य 1530 के दशक में शेरशाह सूरी द्वारा प्रारंभ करवाया गया था जिसे हुमायूँ ने अपने शासनकाल में पूरा करवाया।
- यह किला कई महत्त्वपूर्ण संरचनाओं से युक्त है जिसमे किला-ए-कुहना मस्जिद, लाल दरवाज़ा, खैरुल मनाज़िल आदि।

लाल किला

- इस किले का निर्माण 1638 ई. में शाहजहाँ के द्वारा करवाया गया जिसे वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी द्वारा डिज़ाइन किया गया था।
- लाल बलुआ पत्थर से निर्मित यह किला यमुना नदी के तट पर बना है जो मुगल, फारसी, तैमूरी एवं भारतीय शैलियों का सहज मिश्रण है।

- प्रत्येक वर्ष स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा लाल किले पर ध्वजारोहण किया जाता है जो देश की संप्रभुता और एकता का प्रतीक है।
- इस स्मारक को वर्ष 2007 में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया था।

गुजरात के किले

उपरकोट किला

- जूनागढ़ में स्थित इस किले का निर्माण 319 ई.पू. में मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त ने करवाया था।
- किले के भीतर एक पुरानी मस्जिद, हज़ारों साल पुरानी बौद्ध गुफाओं का एक समूह एवं दो बेहतरीन बावड़ियों जैसे वस्तुशिल्प रत्न मौजूद हैं।

पावागढ़ चंपानेर किला

- इसकी निर्माण 8वीं शताब्दी में हुआ, जब यह चावड़ा राजवंश के लिए एक किलेबंद चौकी के रूप में कार्य करता था।
- इसके बाद, यह सोलंकी राजपूतों (गुजरात के चालुक्य) के नियंत्रण में आया।
- वस्तुकला की दृष्टि से, यह किला इंजीनियरिंग और शिल्प कौशल का एक अद्भुत नमूना है।
- वर्ष 2004 में इस किले को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया।

दीव किला

- दीव किला, जो कि पुर्तगालियों द्वारा बनवाया गया था वास्तुकला की दृष्टि से यह किला लाल बलुआ पत्थर से बनी एक उत्कृष्ट कृति है।

भुजिया किला

- इसका निर्माण 1715 ई. में कच्छ साम्राज्य के शासक राव गोड जी प्रथम के शासनकाल में हुआ।

भद्रा किला

- अहमदाबाद में स्थित इस किले का निर्माण अहमद शाह प्रथम ने वर्ष 1411 ई. करवाया था।
- वास्तुकला की दृष्टि से भद्रा किला इंडो-इस्लामिक शैली का मिश्रण है

दक्षिण भारत के किले

कोंडापल्ली किला

- आंध्र प्रदेश की पूर्वी घाट की पहाड़ियों पर स्थित यह किला इंडो-गोथिक शैली से निर्मित है।
- शुरू में 12वीं शताब्दी में कोंडापल्ली पश्चिमी चालुक्य सीमा का भाग था बाद में यह विजयनगर साम्राज्य के अधीन भी रहा।

उदयगिरि किला

- नेत्तूर ज़िले में सामरिक उद्देश्य से बनाया गया यह किला शुरुआत में विजयनगर शासन के अधीन था, परंतु बाद में यह गजपति शासकों के कब्ज़े में रहा।
- 1513 ईस्वी में इस पर कृष्णदेव राय ने पुन: इस किले पर अधिकार करके विजयनगर साम्राज्य में मिला लिया।

भोनगिर किला

- तेलंगाना में स्थित यह किला शुरुआत में काकतीय शासकों के अधिकार में था, किंतु बाद में इसे अलाउद्दीन खिलजी द्वारा नष्ट कर दिया गया।

गोलकुंडा किला

- तेलंगाना में स्थित इस किले का निर्माण वारंगल के राजा ने 14वीं शताब्दी में कराया था। बाद में यह बहमनी राजाओं के हाथ में चला गया और मुहम्मदनगर कहलाने लगा।

- 1512 ई. में यह कुतुबशाही राजाओं के अधिकार में आया और वर्तमान हैदराबाद के शिलान्यास के समय तक उनकी राजधानी रहा। फिर 1687 ई. में इसे औरंगज़ेब द्वारा जीत लिया गया।

वेल्लोर किला

- वेल्लोर किला तमिलनाडु के मध्ययुगीन वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक है। इस किले का निर्माण 16वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य द्वारा बनवाया गया था।
- यह किला पूरी तरह से ग्रेनाइट पत्थरों से बना है जिसे आर्कोट और चित्तूर से आयात किया जाता था।

निष्कर्ष

- देश के विभिन्न भागों में स्थित ये किले क्षेत्र की समृद्ध और विविध विरासत के जीवंत प्रमाण हैं, जो विभिन्न राजवंशों और संस्कृतियों के प्रभावों को दर्शाते हैं जिन्होंने इसके इतिहास को आकार दिया है। ये किले न केवल सैन्य गढ़ के रूप में बल्कि राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधि के केंद्र के रूप में भी काम करते थे, जिससे व्यापार, वाणिज्य और बौद्धिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला। वे हिंदू, इस्लामी और यूरोपीय प्रभावों के समन्वित मिश्रण के साक्षी हैं जो भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य की विशेषता है।

भारत में यूनेस्को विश्व विरासत स्थल

भूमिका

- यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल सूची में 750 से अधिक सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित स्थलों को दर्ज किया गया है। उनकी भव्यता हमारे जीवन को समृद्धता प्रदान करती है और हमारे ग्रह एवं उसके निवासियों की विविधता को प्रदर्शित करती है।

विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित कन्वें_शन, 1972

- कन्वेंशन, 1972 में यूनेस्को के सामान्य सम्मेलन में एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता पारित किया गया था जो इस अवधारणा पर आधारित था कि पृथ्वी पर कुछ स्थान उत्कृष्ट सार्वभौमिक महत्त्व के हैं और इसलिए उन्हें मानव जाति की साझा विरासत का भाग बनना चाहिए।
- इस कन्वेंशन का पालन करने वाले राष्ट्र एक अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में शामिल हो गए हैं जो हमारी दुनिया के सबसे असाधारण प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत को पहचान करने और उसको रक्षा करने के एक साझा मिशन में एकजुट हैं।
- राष्ट्रीय संप्रभुता का पूरी तरह से सम्मान करते हुए और राष्ट्रीय कानून द्वारा प्रदान किए गए संपत्ति अधिकारों पर बिना पूर्वाग्रह के कन्वेंशन का पालन करने वाले राष्ट्रों ने माना है कि विश्व विरासत की सुरक्षा समग्र रूप से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का कर्तव्य है।

भारत के विश्व विरासत स्थल

- भारत के कुल 42 स्थलों को विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है।

आगरा का किला

- ताज महल के उद्यानों के समीप यह 16वीं शताब्दी का महत्त्वपूर्ण मुगल स्मारक है जो आगरा के लाल किले के नाम से जाना जाता है।
- लाल बलुआ पत्थर का यह भव्य किला अपनी 2.5 किमी. लंबी चारदीवारी के भीतर बना हुआ है।

अजंता की गुफाएँ

- अजंता में पहला बौद्ध गुफा स्मारक दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व का है। गुप्त काल (5वीं और 6वीं शताब्दी ईस्वी) के दौरान कई अन्य अति सुसज्जित गुफाओं को मूल समूह में जोड़ा गया।

- अजंता के भित्ति-चित्र और मूर्तियाँ जिन्हें बौद्ध धर्म कला की उत्कृष्ट कृतियाँ माना जाता है, का कला के क्षेत्र में प्रचुर प्रभाव देखा गया है।

नालंदा, बिहार में नालंदा महाविहार का पुरातत्त्व स्थल

- नालंदा महाविहार स्थल उत्तर-पूर्वी भारत के बिहार राज्य में है।
- इसमें तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 13वीं शताब्दी ईस्वी तक के एक मठवासी और शैक्षिक संस्थान के पुरातात्त्विक अवशेष शामिल हैं।
- इसमें स्तूप, मंदिर, विहार (आवासीय और शैक्षिक भवन) तथा प्लास्टर, पत्थर एवं धातु से बनी महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ शामिल हैं।

साँची का बौद्ध स्मारक

- मध्य प्रदेश में स्थित साँची स्थल में बौद्ध स्मारकों (एक पत्थर के स्तंभ, महल, मंदिर और मठ) का एक समूह शामिल है।
- मौजूदा समय में यह प्राचीनतम बौद्ध स्थल है और 12वीं शताब्दी ईस्वी तक भारत का एक प्रमुख बौद्ध केंद्र था।

चंपानेर-पावागढ़ पुरातत्त्व स्थल

- इस स्थल में 8वीं से 14वीं शताब्दी के अन्य अवशेषों में दुर्ग, प्रासाद, धार्मिक इमारतें, आवासीय परिसर, कृषि संरचनाएँ और जल संरक्षण प्रतिष्ठान भी शामिल हैं।
- यह स्थल एकमात्र पूर्ण और अपरिवर्तित इस्लामिक मुगल-पूर्व शहर है।

छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (पूर्व में विक्टोरिया टर्मिनस)

- मुंबई में छत्रपति शिवाजी टर्मिनस जो पहले विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन के नाम से जाना जाता था भारत में विक्टोरियन गोथिक पुनरुद्धार वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें भारतीय पारंपरिक स्थापत्य कला से व्युत्पन्न विषयों का संगम है।

- ब्रिटिश वास्तुकार एफ.डब्ल्यू. स्टीवंस द्वारा डिज़ाइन की गई यह इमारत 'गोथिक सिटी' और भारत के प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक बंदरगाह के रूप में बॉम्बे का प्रतीक बन गई।

गोवा के चर्च और कॉन्वेंट

- पुर्तगाल के अधीन भारत (इंडीज) की पूर्व राजधानी गोवा के चर्च और कॉन्वेंट, विशेष रूप से चर्च ऑफ बॉम जीसस, जिसमें सेंट फ्रांसिस जेवियर की कब्र है, एशिया के ईसाई धर्म प्रचार को दर्शाते हैं।
- इन स्मारकों ने एशिया के उन सभी देशों में जहाँ मिशन स्थापित किए गए थे। मैनुएलिन, मैनरिस्ट और बरोक वास्तुकला शैलियों के विस्तार में प्रभावी भूमिका अदा की।

धौलावीरा : एक हड़प्पा शहर

- हड़प्पा सभ्यता का दक्षिणी केंद्र, प्राचीन शहर धौलावीरा, गुजरात राज्य में खादिर के शुष्क द्वीप पर है।
- 3000 से 1500 ईसा पूर्व तक, बसावट वाले इस पुरातात्त्विक स्थल में जो दक्षिण-पूर्व एशिया में उस काल की सबसे अच्छी संरक्षित शहरी बसावटो किलेबंदी वाला शहर और कब्रिस्तान मौजूद हैं।
- एक परिष्कृत जल प्रबंधन प्रणाली कठोर वातावरण में जीवित रहने और पनपने के संघर्ष में धौलावीरा के लोगों की सरलता को प्रदर्शित करती है।
- पत्थर से बनी कलाकृतियाँ, अर्द्ध-कीमती पत्थरों के आभूषण, टेराकोटा, सोना, हाथी दाँत और अन्य सामग्री मिली हैं जो संस्कृति की कलात्मक और तकनीकी उपलब्धियों को प्रदर्शित करती हैं।

एलिफेंटा गुफाएँ

- मुंबई के नज़दीक एक द्वीप पर 'गुफाओं के शहर' में भगवान शिव से जुड़ी रॉक-कट कला का संग्रह है।

- यहाँ भारतीय कला को अपनी सबसे बेहतरीन अभिव्यक्ति मिली है, खास तौर पर मुख्य गुफा में बनी विशाल ऊँची नक्काशी।

एलोरा की गुफाएँ

- महाराष्ट्र में औरंगाबाद के समीप एलोरा की गुफाओं में एक ऊँची बेसाल्ट चट्टान की दीवार में अगल-बगल खोदे गए 2 किमी. से अधिक तक फैले 34 मठ और मंदिर हैं।
- एलोरा परिसर बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और जैन धर्म को समर्पित अपने मंदिरों के साथ यह सहिष्णुता की भावना को दर्शाता है जो प्राचीन भारत की विशेषता थी।

फतेहपुर सीकरी

- सम्राट अकबर द्वारा 16वीं शताब्दों के उत्तरार्द्ध में निर्मित फतेहपुर सीकरी (विजय का शहर) केवल लगभग 10 वर्षों तक मुगल साम्राज्य की राजधानी थी।
- एकसमान स्थापत्य शैली में बने स्मारकों और धर्मस्थलों के परिसर में भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक जामा मस्जिद भी शामिल है।

चोल मंदिर समूह

- चोल मंदिरों का निर्माण चोल साम्राज्य के राजाओं द्वारा किया गया था जिसका विस्तार पूरे दक्षिण भारत और पड़ोसी द्वीपों तक था।
- इस स्थल में 11वीं और 12वीं सदी के तीन भव्य मंदिर शामिल हैं : तंजावुर में बृहदेश्वर मंदिर, गंगैकोंडचोलपुरम् में बृहदेश्वर मंदिर और दारासुरम में ऐरावतेश्वर मंदिर।

हंपी में स्मारकों का समूह

- हंपी महान हिंदू साम्राज्य विजयनगर की अंतिम राजधानी थी। इसके बेहद धनाढ्य राजकुमार ने द्रविड़ मंदिर और महलों का निर्माण कराया था।
- 1565 ई. में दक्कन मुस्लिम संघ द्वारा जीत लिए जाने के बाद इसे छोड़े जाने से पूर्व छह महीने तक यहाँ लूटपाट की गई थी।

महाबलीपुरम में स्मारकों का समूह

- पल्लव राजाओं द्वारा स्मारकों के इस समूह की स्थापना 7वीं से 8वीं शताब्दी में कोरोमंडल तट पर चट्टानों को तराश कर की गई थी।
- यह विशेष रूप से अपने रथ मंदिरों, गुफा स्मारकों (मंडपों), प्रसिद्ध 'गंगा के अवतरण' और भगवान शिव की महिमामंडन के लिए हज़ारों मूर्तियों वाले मंदिर परिसर के लिए जाना जाता है।

पट्टदकल में स्मारकों का समूह

- कर्नाटक में स्थित इन स्मारकों का निर्माण चालुक्य राजवंश के तहत 7वीं से 8वीं शताब्दी में उत्तरी और दक्षिणी भारत के वास्तुशिल्प रूपों का सामंजस्य करके करवाया गया।
- विरुपाक्ष मंदिर इस समूह की एक उत्कृष्ट कृति है, जिसे 740 ई. में रानी लोक महादेवी द्वारा दक्षिण के राजाओं पर अपने पति की जीत के उपलक्ष्य में बनवाया गया था।

राजस्थान के पर्वतीय किले

- इस विरासत समूह स्थल में राजस्थान के चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, सवाई माधोपुर, जैसलमेर, जयपुर और झालावाड़ में स्थित छह राजसी किले शामिल हैं।
- किलों की विविध वास्तुकला 8वीं से 18वीं शताब्दी तक इस क्षेत्र में फली-फूली थीं।
- इन किलों में व्यापक जल संरक्षण संरचनाएँ भी शामिल हैं, जो आज भी बड़े पैमाने पर उपयोग में हैं।

अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर

- साबरमती नदी के पूर्वी तट पर 15वीं शताब्दी में सुल्तान अहमद शाह द्वारा स्थापित अहमदाबाद का चारदीवारी वाला शहर, सल्तनत काल की एक समृद्ध वास्तुकला विरासत प्रस्तुत करता है।

हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली

- 1570 ई. में बना यह मकबरा विशेष सांस्कृतिक महत्त्व का है क्योंकि यह भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान मकबरा था। इसने कई प्रमुख वास्तुशिल्प नवाचारों को प्रेरित किया, जिसकी परिणति ताज महल के निर्माण में हुई।

जयपुर शहर, राजस्थान

- भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्य राजस्थान में जयपुर शहर की स्थापना 1727 ई. में सवाई जय सिंह द्वितीय ने की थी।
- पहाड़ी इलाकों में स्थित क्षेत्र के अन्य शहरों के विपरीत जयपुर को मैदानी इलाके में निर्मित किया गया था यह वैदिक वास्तुकला के अनुसार बनाया गया था।

काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर

- यह काकतीय वंश (1123-1323 ई.पू.) के शासकों रुद्रदेव और रेचरला रुद्र के अधीन निर्मित एक दीवार वाले परिसर में स्थित मुख्य शिव मंदिर है।

खजुराहो स्मारक समूह

- खजुराहो में मंदिरों का निर्माण चंदेल राजवंश के दौरान किया गया था। वर्तमान में केवल 20 मंदिर ही बचे हैं जो तीन अलग-अलग समूहों में दो धर्मों हिंदू धर्म और जैन धर्म से संबंधित है।
- वे वास्तुकला और मूर्तिकला के बीच एक आदर्श संतुलन बनाते हैं। कंदरिया का मंदिर ऐसी नक्काशीदार मूर्तियों से सुसज्जित है जो भारतीय कला की सबसे महान कृतियों में गिनी जाती है।

बोधगया में महाबोधि मंदिर परिसर

- महाबोधि मंदिर परिसर भगवान बुद्ध के जीवन और विशेष रूप से ज्ञान प्राप्ति से संबंधित चार पवित्र स्थलों में से एक है। यह मंदिर 5वीं से 6वीं शताब्दी का है।
- यह पूरी तरह से ईंटों से निर्मित सबसे पुराने बौद्ध मंदिरों में से एक है जो भारत में गुप्त काल के अंत से आज तक अपना गौरवपूर्ण अस्तित्व कायम रखे हुए है।

भारत की पर्वतीय रेलवे

- इस स्थल में तीन रेलवे शामिल हैं। दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे, पर्वतीय यात्री रेलवे का सर्वप्रथम और अब तक का भी सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।
- तमिलनाडु राज्य में 46 किमी. लंबे मीटर गेज़ सिंगल ट्रैक रेलवे नीलगिरि माउंटेन रेलवे का निर्माण पहली बार 1854 ई. में प्रस्तावित किया गया था।
- कालका शिमला रेलवे 96 किमी. लंबा, सिंगल ट्रैक वर्किंग रेल लिंक है जिसे 19वीं शताब्दी के मध्य में शिमला के ऊँचे पहाड़ी शहर को सेवा प्रदान करने के लिए बनाया गया था जो रेलवे के माध्यम से पहाड़ी आबादी को विस्थापित करने के तकनीकी और भौतिक प्रयासों का प्रतीक है।

कुतुब मीनार परिसर, दिल्ली

- 13oha शताब्दी की शुरुआत में दिल्ली में निर्मित कुतुबमीनार की लाल बलुआ पत्थर की मीनार 72.5 मीटर ऊँची है, जो अपने शिखर पर 2.75 मीटर व्यास से लेकर आधार पर 14.32 मीटर तक है।
- इन स्मारकों के आसपास अन्य पुरातात्त्विक इमारतें हैं जिनमें विशेष रूप से अलाई दरवाज़ा गेट, जो इंडो-मुस्लिम कला की उत्कृष्ट कृति है (1311 ई. में निर्मित) और दो मस्जिदें, जिनमें कुव्वतुल-इस्लाम भी शामिल है जो उत्तरी भारत में सबसे पुरानी है।

रानी-की-वाव (रानी की बावड़ी), पाटण, गुजरात

- रानी-की-वाव बावड़ी निर्माण और मारू-गुर्जर स्थापत्य शैली में कारीगरों के बेहतरीन कौशल का परिणाम है जो इस जटिल तकनीक में हासिल महारत और बारीकियों व अनुपात का अनुपम सौंदर्य दर्शाता है।
- जल की पवित्रता को उजागर करने वाले एक उल्टे मंदिर के रूप में डिज़ाइन की गई। इस बावड़ी को उच्च कलात्मकता वाले मूर्तिकला पैनलों के साथ सीढ़ियों के सात स्तरों में विभाजित किया गया है।

लाल किला परिसर

- लाल किला परिसर को शाहजहानाबाद के महल किले के रूप में बनाया गया था जो मुगल सम्राट शाहजहाँ की नई राजधानी थी।
- लाल किले की अभिनव योजना, वास्तुकला शैली और उद्यान डिज़ाइन ने राजस्थान, दिल्ली, आगरा और अन्य क्षेत्रों में इमारतों और उद्यानों के निर्माण को बेहद प्रभावित किया है।

भीमबेटका के शैलाश्रय

- विशाल बलुआ पत्थर की चघ्ट्टानों के भीतर घने जंगल के ऊपर प्राकृतिक शैलाश्रयों के पाँच समूह हैं।
- ये मेसोलिथिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक की कलाकृतियाँ प्रदर्शित करते हैं।

होयसलों की पवित्र मंडली

- मंदिरों की विशेषता अति वास्तविक मूर्तियाँ और पत्थर की नक्काशी है जो संपूर्ण वास्तुशिल्प सतह पर मौजूद है, एक परिक्रमा वेदिका, विशाल मूर्तिकला वीथि, एक बहु-स्तरीय चित्रवल्लरी और साल किंवदंती से संबंधित मूर्तियाँ हैं।

- मूर्तिकारी कला को उत्कृष्टता इन मंदिर परिसरों की कलात्मक उपलब्धि को रेखांकित करती है जो हिंदू मंदिर वास्तुकला के ऐतिहासिक विकास में एक महत्त्वपूर्ण चरण का प्रतिनिधित्व करती है।

शांति निकेतन

- प्रसिद्ध कवि और दार्शनिक रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा 1901 ई. में ग्रामीण पश्चिम बंगाल में स्थापित शांति निकेतन एक आवासीय विद्यालय और प्राचीन भारतीय परंपराओं और धार्मिक एवं सांस्कृतिक सीमाओं से परे मानवता की एकता की दृष्टि पर आधारित कला का केंद्र था।
- 'विश्व भारती' को मान्यता के रूप में 1921 ई. में शांति निकेतन में एक 'विश्व विश्वविद्यालय' की स्थापना की गई।

सूर्य मंदिर, कोणार्क

- बंगाल की खाड़ी के तट पर उगते सूरज की किरणों से प्रकाशित कोणार्क का मंदिर सूर्य देवता के रथ का एक स्मारकीय प्रतीक है।
- इसके 24 पहिए प्रतीकात्मक डिज़ाइनों से सज्जित हैं और इसका नेतृत्व छह अश्वों का दल करता है।

ताज महल

- आगरा में 17वीं शताब्दी में मुगल बादशाह शाहजहाँ के द्वारा बनवाया गया सफेद संगमरमर का एक विशाल मकबरा, ताज महल भारत में मुस्लिम कला का चरमोत्कर्ष है।
- यह विश्व विरासत के सार्वभौमिक रूप से प्रशंसित उत्कृष्ट कृतियों में से एक है।

जंतर-मंतर, जयपुर

- जयपुर में जंतर-मंतर, 18वीं शताब्दी की शुरुआत में बनाया गया एक खगोलीय अवलोकन स्थल है। इसमें लगभग 20 मुख्य स्थिर उपकरणों का एक सेट शामिल है।

- यह भारत की ऐतिहासिक वेधशालाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण, सबसे व्यापक और सबसे अच्छी तरह से संरक्षित है। यह मुगल काल के अंत में एक विद्वान राजकुमार के दरबार के खगोलीय कौशल और ब्रह्मांड संबंधी अवधारणाओं की अभिव्यक्ति है।

मुंबई का विक्टोरियन गोथिक और आर्ट डेको इमारत समूह

- वैश्विक व्यापार केंद्र बनने के बाद, मुंबई शहर ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक महत्त्वाकांक्षी शहरी नियोजन परियोजना लागू की। जिसमें सार्वजनिक भवनों का निर्माण हुआ, पहले विक्टोरियन नियो-गोथिक शैली में और फिर 20वीं शताब्दी की शुरुआत में आर्ट डेको शैली में हुआ।

ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क संरक्षण क्षेत्र

- हिमाचल प्रदेश में हिमालय पर्वत के पश्चिमी भाग में स्थित इस राष्ट्रीय उद्यान की विशेषता ऊँची अल्पाइन चोटियाँ, अल्पाइन घास के मैदान और नदियों वाले जंगल हैं।
- यह हिमालय जैव-विविधता हॉटस्पॉट का हिस्सा है और इसमें 25 प्रकार के वनों के साथ-साथ जीव-जंतुओं की प्रजातियों का एक समृद्ध समूह शामिल है जिनमें से कई विलुप्त होने की कगार पर हैं।
- यह विशिष्टता इस स्थल को जैव-विविधता संरक्षण के लिए अति महत्त्वपूर्ण बनाता है।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान

- असम के बीचों-बीच यह राष्ट्रीय उद्यान पूर्वी भारत के उन अंतिम क्षेत्रों में से एक है जो मानव की मौजूदगी से अछूता है।
- यहाँ एक सींग वाले गैंडों की दुनिया की सबसे बड़ी आबादी के साथ-साथ बाघ, हाथी, तेंदुआ और भालू सहित कई स्तनधारी और हज़ारों पक्षी रहते हैं।

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान

- राजस्थान में स्थित यह उद्यान अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, चीन और साइबेरिया से बड़ी संख्या में जलीय पक्षियों के लिए प्रमुख शीतकालीन प्रवास क्षेत्रों में से एक है।
- यहाँ दुर्लभ साइबेरियन क्रेन सहित पक्षियों की लगभग 364 प्रजातियाँ दर्ज की गई हैं।

मानस वन्यजीव अभयारण्य

- हिमालय की तलहटी में असम में स्थित मानस अभयारण्य वन्यजीवों की एक विशाल विविधता संजोए है इस। अभयारण्य में बाघ, पिग्मी हॉग, भारतीय गैंडा और भारतीय हाथी जैसी कई लुप्तप्राय प्रजातियाँ शामिल हैं।

नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान

- पश्चिम हिमालय क्षेत्र में ऊँचाई पर स्थित भारत का फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान अपने स्थानिक अल्पाइन फूलों के घास के मैदानों और मनोरम प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।
- यह समृद्ध विविधता वाला क्षेत्र दुर्लभ और लुप्तप्राय जानवरों का भी वास स्थल है जिनमें एशियाई काला भालू, हिम तेंदुआ, भूरा भालू और नीली भेड़ शामिल हैं।

सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान

- सुंदरबन गंगा डेल्टा में 10,000 किमी. भूमि और जल (इसका आधे से अधिक भारत में, शेष बांग्लादेश में) में फैला है। इसमें दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन क्षेत्र शामिल है।
- उद्यान में बाघ, जलीय स्तनधारी, पक्षी और सरीसृप सहित कई दुर्लभ या लुप्तप्राय प्रजातियाँ रहती हैं।

पश्चिमी घाट

- हिमालय पर्वत से भी पुरानी पश्चिमी घाट की पर्वत शृंखला अद्वितीय जैव-भौतिकीय और पारिस्थितिक प्रक्रियाओं के साथ अत्यधिक महत्त्व की भू-आकृति संबंधी विशेषताओं को दर्शाती है।
- स्थल के उच्च पर्वतीय वन पारिस्थितिकी तंत्र भारतीय मानसून मौसम पैटर्न को प्रभावित करते हैं। क्षेत्र की उष्णकटिबंधीय जलवायु को नियंत्रित करते हुए यह स्थल पृथ्वी पर मानसून प्रणाली का सबसे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- इसे जैविक विविधता के दुनिया के आठ 'सबसे असाधारण हॉटस्पॉट' में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है।

कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान

- उत्तरी भारत (सिक्किम राज्य) में हिमालय शृंखला के केंद्र में स्थित, कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान में मैदानों, घाटियों, झीलों, ग्लेशियरों और प्राचीन जंगलों से ढके शानदार हिमाच्छादित पहाड़ों की एक अनूठी विविधता शामिल है और इसमें माउंट कंचनजंगा नामक दुनिया की तीसरी सबसे ऊँची चोटी भी शामिल है।
- पौराणिक कहानियाँ इस पर्वत और बड़ी संख्या में मौजूद प्राकृतिक तत्त्वों (गुफाओं, नदियों, झीलों आदि) से जुड़ी हुई हैं जिन्हें सिक्किम के मूल निवासियों द्वारा पूजा जाता है। इन कहानियों और प्रथाओं के पावन अर्थों को बौद्ध मान्यताओं के साथ एकीकृत किया गया है और ये सिक्किमी पहचान का आधार हैं।

भारतीय इतिहास में किलों की भूमिका

संदर्भ

- किला शब्द आमतौर पर एक मज़बूत सुरक्षात्मक इमारत या दीवार, लकड़ी के तख्त या बाड़ वाला स्थान माना जाता है जिसे अक्सर एक खाई, गहरी खाई या गढ़ वाली दीवारों की आगे की पंक्तियों एवं योद्धाओं द्वारा संरक्षित किया जाता है। किले, किलेबंदी और महल भारत की निर्मित विरासत में, सबसे बहुल प्रतीकों में से एक हैं।

किलेबंदी की प्राचीन परंपरा

- प्रारंभिक किलेबंदी के संदर्भ में साधारण निवास स्थलों के लिए तीन प्रमुख तरीकों का उपयोग किया गया था :

एक मिट्टी की प्राचीर का निर्माण

- मलबे और मिट्टी का उपयोग करके बड़ी और लंबी सुरक्षात्मक प्राचीर
- किलों की ओर जाने वाले पहाड़ी दर्रों का उपयोग करके किलेबंदी करना
- यही तीसरी पद्धति ऐतिहासिक काल में भारत के अधिकांश किलों का आधार बनी।

किला या शहर निर्माण के ऐतिहासिक साक्ष्य

- साहित्यिक और ऐतिहासिक संदर्भ, पुरातात्त्विक, वास्तुशिल्प और कला के उदाहरण पूरे भारत में विभिन्न शहर की दीवारों और किलेबंदी के बारे में ज्ञान प्रदान करते हैं।
- वास्तुकला पर ग्रंथ (या शिल्प शास्त्र) जैसे- मानसर, मयमतम, शिल्प-रत्न, समरांगना सूत्रधार आदि अलग-अलग समयावधि में और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में रचित, किलों एवं किलेबंदी के संदर्भ प्रदान करते हैं।
- साथ ही, उपयोग की जाने वाली निर्माण सामग्री और किलों को खड़ा करने के लिए स्थानों के चयन का उल्लेख करते हैं।

- कौटिल्य की पुस्तक 'अर्थशास्त्र' में छह प्रमुख प्रकार के किलों का उल्लेख मिलता है -

1. जल-दुर्ग, या जल किला
   अंतर्दीप-दुर्ग (द्वीप किला)
   स्थल-दुर्गा (सादा किला)
2. धन्वन दुर्ग (रेगिस्तानी किला)
3. गिरि-दुर्ग या पहाड़ी किला
   प्रांतारा-दुर्ग
   गिरि-पार्श्व-दुर्ग
   गुहा-दुर्ग
4. वन-दुर्ग (वन किला)
   खंजाना-दुर्ग
   स्तंभ-दुर्ग
5. माही-दुर्गा (मिट्टी का किला)
   मृद-दुर्ग
   परिघा-दुर्ग
   पंक-दुर्ग
6. नृ-दुर्गा (मानव किला)

किला निर्माण का ऐतिहासिक विकास

- किलों का विकास विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों में हुआ है, जिनका हड़प्पा काल से आरंभ माना जाता है।
- किंतु, अधिकांश किले सल्तनत और मुगल शाही शासन, मराठा साम्राज्य के साथ-साथ क्षेत्रीय राजवंशों राजपूत, सिख, काकतीय, बहमनी, कुतुबशाही या यहाँ तक कि असम क्षेत्र में अहोम राजवंश के प्रसार को दर्शाते हैं। भारत के तटीय क्षेत्र में कुछ पुर्तगाली और ब्रिटिश युग के किलेबंदी भी हैं।

- किलेबंदी के सबसे पहले पुरातात्त्विक साक्ष्य प्रोटो-ऐतिहासिक हड़प्पा संस्कृति के 1,050 से अधिक ज्ञात स्थलों और बस्तियों पर मिलते हैं जो 3000 और 1500 ईसा पूर्व के बीच के हैं।
- हड़प्पा के लगभग सभी बड़े स्थलों पर संरक्षित प्रवेश द्वारों, गढ़ों और गढ़ों के लिए पक्की ईंटों और कच्ची मिट्टी की ईंटों का उपयोग किया जाता है।
- चौथी शताब्दी ई.पू. तक आते-आते पूरे भारत में किलेबंद, बस्तियाँ या शहरी केंद्र और एक अलग प्रकार के शहर सामने आए। इस तरह के गढ़ वाले शहरों में सोलह महाजनपदों की राजधानियों के रूप में उल्लेखित स्थल शामिल हैं जिनमे पाटलिपुत्र, कौशांबी, उज्जैन (उज्जयिनी), काशी, मथुरा, तक्षशिला (तक्षशिला), आदि।
- 7वीं शताब्दी ई.पू. के साक्ष्य इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय उपमहाद्वीप में पहाड़ी चोटी या पहाड़ी के प्रकार के बजाय किलेबंद गढ़ और शहर या किलेबंद छावनी, छावनियों की रेखाएँ या अर्द्ध-गढ़ वाले परिदृश्य थे।
- मौर्य, गुप्त, प्रतिहार, वाकाटक, चोल, पांड्य आदि राजवंशों के सांस्कृतिक परिदृश्य में पंजाब, सिंध, राजस्थान आदि क्षेत्रों में 8वीं शताब्दी के बाद से बने विशाल रक्षात्मक किलों की तुलना में किलेबंद शहर अधिक थे और उन्होंने 10वीं से 17वीं शताब्दी तक एक नया रूप धारण किया।
- 10वीं-11वीं शताब्दी के बाद, राज्यों की राजधानी ने एक किलेबंद शहर की बस्ती के बजाय एक रक्षात्मक किले का रूप लेना शुरू कर दिया।
- इसके साथ ही, गढ़ वाले किले विकसित हुए जिनके चारों ओर शहर और कस्बे विकसित हुए।
- उदाहरण के लिए, दिल्ली, आगरा, लाहौर, ओरछा और पुणे आदि।
- 16वीं शताब्दी में तोपखाने की शुरुआत के कारण किलों के निर्माण और डिज़ाइन में कई बदलाव हुए, जैसे- बारूद और तोपों के आगमन से मोटी दीवारें बनाना, केंद्र में एक गढ़ का निर्माण करना और गढ़ व दीवारों के बीच अधिक क्षेत्र बनाना आदि।

- पुर्तगाली, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी, या फ्राँसीसी, डच या डेनिश के साथ यूरोपीय संपर्क का किलों पर प्रभाव पड़ा।
- इस तरह की प्रक्रिया तुर्की, अफगान और बाद में मुगल सैनिकों एवं उनके सेनापतियों के साथ भी घटित हुई थी।
- अंग्रेज़ों ने तट के किनारे व्यापारिक चौकियाँ स्थापित की और प्रत्येक चौकी पर सुरक्षात्मक किले बनाए।
- जैसे- मुंबई के किले, कोलकाता के फोर्ट विलियम, चेन्नई का सेंट जॉर्ज किला आदि।
- इनके पहले के किलों की भेद्यता, फ्राँसीसी शत्रुता और कंपनी की बढ़ती ताकत के परिणामस्वरूप निर्माण के दूसरे दौर में मज़बूती और अधिक जटिल डिज़ाइन सामने आई जिसमें फोर्ट सेंट जॉर्ज का डिज़ाइन फ्राँसीसी इंजीनियर वाउबन के प्रभावों को दर्शाता है।

निष्कर्ष

- भारत में प्रारंभिक ऐतिहासिक काल से ही ओरछा, आमेर, आदि जैसे कई किलेबंद शहर रहे हैं, साथ ही शहरों के भीतर दीवारों से घिरे पवित्र बाड़े (जैसे- त्रिवेंद्रम, पुरी, कांचीपुरम आदि) भी हैं। इसी तरह, सुरक्षात्मक दीवारों और द्वारों वाले ऐतिहासिक शहर के साथ कई पूर्व-आधुनिक काल के शहर भी हैं, जैसे- आगरा, दिल्ली, अहमदाबाद (एक और विश्व धरोहर स्थल) और जयपुर। विभिन्न राजधानियों के शहरों के द्वारा उदाहरण दिए गए हैं। इनके अलावा, सैकड़ों किले भी रहे हैं।
- इस प्रकार किलों और मज़बूत विरासत की बात आती है तो भारत का एक समृद्ध और विविध इतिहास है, जिस पर हमें गर्व है।